International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 11 Issue 5, Sept.-Oct, 2023, Impact Factor: 7.326

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सूचना प्रौधोगिकी संसाधनों एवं इण्टरनेट प्रयोग का उनके समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन

कुलदीप सिंह[1], डॉ० विकास कुमार[2]

[1]शोधार्थी, हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्याल, ढाड गाँव, पोखरा जिला पौड़ी गढ़वाल
[2]शोध निर्देशक (शिक्षा विभाग, हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, ढाड गाँव, पोखरा जिला पौड़ी गढ़वाल

सारांश

औपचारिक रूप से कक्षागत शिक्षण को ओर अधिक उन्नत करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी एवं इण्टरनेट संसाधनों का प्रयोग वर्तमान में अधिक मात्रा में हो रहा है। भारत से लेकर सम्पूर्ण विश्व शिक्षण व्यवस्था को एक आधार स्तम्भ प्रदान करने मे सूचना प्रौद्योगिकी संसाधनों एवं इण्टरनेट संसाधनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। शोधकार्य का प्रमुख उद्देश्य यह ज्ञात करना कि विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाले आईसीटी के प्रयोग से उनके समायोजन पर प्रभाव की जानकारी प्राप्त करना है। शोधकर्ता ने हे0न0ब0ग0 विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल एवं श्री देव सुमन विश्वविद्यालय, बादशाही थौल, नई टिहरी द्वारा मान्यता प्राप्त महाविद्यालयों कें अध्ययनरत् स्नातक स्तर के 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया। न्यादशों से स्वनिर्मित सूचना प्रौद्योगिकी एवं इण्टरनेट संसाधना उपयोग मापनी तथा सिन्हा एवं सिह द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया। सांख्यिकीकरण के पश्चात् प्राप्त विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि आई0सी0टी0 एवं इण्टरनेट के प्रयोग द्वारा विद्यार्थियों के समायोजन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। तथा सूचना प्रौद्योगिकी एवं इण्टरनेट संसाधनों के प्रयोग एवं समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

मुख्य बिन्दू– कोरोना महामारी, सूचना प्रौद्योगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन, समायोजन एवं स्नातक स्तर के विद्यार्थी।

प्रस्तावना–

देश का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि उस देश की शिक्षा व्यवस्था कितनी उत्कृष्ट, परिष्कृत एवं उन्नत है। यदि शिक्षा सुदृढ़ एवं वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप है तो निश्चित ही उस देश के विकास की सम्भावनाऐं प्रबल होंगी। कोरोना महामारी ने मानव जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं विभिन्न क्षेत्रों प्रत्येक पक्ष को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। वही शिक्षा की ओर नजर करे तो अधिगमकर्ता को सर्वाधिक रूप से प्रभावित किया है। विद्यार्थी के मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक एवं सामूहिक रूप जैसे अनेक पक्षो को प्रभावित किया है। इस महामारी ने समाज के सामाजिक दूरी को बढ़ावा दिया है, जिससे बच्चों में आपसी जुड़ाव कम होता दिखाई दिया है। शैक्षिक एवं व्यक्तिगत जीवन में विद्यार्थी की विभिन्न प्रकार की आवश्यकताऐं होती है। जिनकों पूर्ण करने के लिए मानव लगातार क्रियाशील रहता है। इस समायोजन को करने में विद्यार्थी का मानसिक, शारीरिक, सांवेगिक रूप से स्वस्थ हो बहुत जरूरी है। जो व्यक्ति मानसिक, शारीरिक, सांवेगिक रूप स्वस्थ्य नही होता वह अपने द्वारा बनाने गये उद्देश्यों को पूर्ण नही कर पाता। वर्तमान प्रतिस्पर्धा के चलते विद्यार्थियों को अपने समाज, संवेगो तथा शैक्षणिक क्षेत्र में समायोजन करने में कठिनाईयॉ लगातार हो रही है। वर्ष 2020 में सम्पूर्ण विश्व में होने वाली महामारी कोरोना ने सम्पूर्ण विश्व को अनेकों समस्याओं का समाना करने के लिए मजबूर कर दिया। विद्यालय, विश्व विद्यालय एवं प्रशिक्षण संस्थान जो औपचारिक रूप से संचालित होते थें वो सब एक साथ बन्द हो गयें। सम्पूर्ण शिक्षण कार्य एक जगह स्थिर सा हो गया था।

सूचना प्रौद्योगिकी एवं इण्टरनेट संसाधनों ने शिक्षण व्यवस्था को भलें ही सम्भालने का कार्य किया लेकिन दूसरी और इसके अत्याधिक प्रयोग से दुस्प्रभाव भी सामने आये। कोराना काल में विद्यार्थियों का मानसिक,

शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास रूक सा गया था। जिस कारण विद्यार्थी अपनी शैक्षिक, सामाजिक, शारीरिक एवं अन्य क्षेत्र में स्वयं को समायोजित करने में असमर्थ हो गये थे। समायोजन को समान्य अर्थ में देखा जाता है कि वह प्रक्रिया जिसमें व्यक्ति स्वयं की आवश्कताओं को पूर्ण करने में सक्षम हो सके। प्रत्येक जीवित प्राणी के सामने कुछ न कुछ बाधाँए और समस्याएँ होती हैं। वह इन समस्याओं तथा जीवन की चुनौतियों को किस प्रकार स्वीकार करता हैं। व्यक्ति की इच्छाएँ और विचार, लक्ष्य आदि सामाजिक मूल्यों से कितना मिला सकते है। इनमें समन्वय जितना अधिक होगा व्यक्ति का समायोजन उतना ही अच्छा होगा। कोरोना काल में किसी तरह विद्यार्थियों अपनी चुनौतियों, लक्ष्यों एवं मूल्यों को पूर्ण करने सफल रहे या कह सकते है कि किस स्तर तक वह स्वयं को विभिन्न क्षेत्रों में समायोजित करने में सफल हो सके। यही जानने के लिए शोधकर्ता ने अपने शोध पत्र में सूचना प्रौद्योगिकी एवं इण्टरनेट संसाधनों के प्रयोग का उनके समायोजन पर क्या प्रभाव पड़ता है। किस तरह वह स्वयं को इन तकनीकी संसाधनों के उपयोग के पश्चात् भी खुद को सामाजिक, शैक्षिक एवं संवेगात्मक रूप से समायोजित करता है।

शोध की आवश्यकता–

कोविड महामारी के कारण सम्पूर्ण विश्व के 161 राष्ट्रो के स्थानीय विद्यालयों, विश्वविद्यालयों को अनिश्चित काल के लिए बंद कर दिया गया था जिस कारण दुनिया के लगभग 1.725 बिलियन विद्यार्थी प्रभावित हुए थे, **युनेस्कों, 2020)**। शैक्षणिक गतिविधियाँ को सुचारू रूप से चलाने के लिए ऑनलाइन शिक्षण कार्यक्रमों को बड़े पैमाने पर लागू किया गया। चीन ऑनलाइन शिक्षक कार्यक्रमों को संचालित करने में प्रथम स्थान पर रहा, **चेन एट अल (2020)**। इण्टरनेट तथा संचार प्रौद्योगिकी संसाधनों के माध्यम से शिक्षण कार्य कराने पर शैक्षणिक पाठ्यक्रमों तत्काल बदलाव होने पर शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को अनेकों तनावों एवं दवाबों को झेलना पडा। जहाँ एक और कोरोना काल में विद्यार्थियों को शैक्षणिक कार्य करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी संसाधनों ने सकारात्मक सहयोग दिया वही दूसरी ओर विद्यार्थियों को मानसिक, शारीरिक एवं संवेगात्मक रूप से प्रभावित किया। इसी को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने उक्त समस्या का चयन किया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त चरों की सक्रियात्मक परिभाषा

सूचना प्रौधोगिकी संसाधनों एवं इण्टरनेट संसाधन –ऐसे संसाधनों से है, जिसके द्वारा व्यक्तिगत संबंधों, दैनिक कार्यप्रणाली, सूचनाओं के आदान प्रदान एवं अन्य मनोरंजन कार्य करने के लिए इण्टरनेट से प्रयोग किया जाने संसाधनों से है।

समायोजन– समायोजन मानव की मनोवैज्ञानिक योग्यता जिसकें आधार पर वह विभिन्न सम विषम परिस्थितियों में स्वयं को समायोजित करता है। समायोजन के अन्तर्गत शैक्षिक, समाजिक एवं सवेंगात्मक समायोजन को सम्मलित किया गया है।

शोध उद्देश्य

स्नातक स्तर के विद्याथियों के सूचना प्रौधोगिकी एवं इण्टरनेट संसाधनों के उपयोग का उनके समायोजन पर प्रभाव की जानकारी प्राप्त करना।

शोध परिकल्पना

- कोरानों काल में में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सूचना प्रौधोगिकी संसाधनों एवं इण्टरनेट के प्रयोग एवं समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- कोरानों काल में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सूचना प्रौधोगिकी संसाधनों एवं इण्टरनेट के प्रयोग एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नही है।

शोध सींमाकन

- शोध पत्र में हेमवती नन्दन बहुगुणा एवं श्री देव सुमन विश्व विद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त महाविद्यालयों में अध्ययनरत् स्नातक स्तर के विद्यार्थियों से सम्बन्धित है।

शोध प्रविधि

अनुसंधान विधि– प्रस्तुत शोध पत्र में विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या–शोधकर्ता द्वारा निर्धारित हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय एवं श्री देव सुमन विश्वविद्यालय में सम्बद्धित महाविद्यालयों की प्रकृति (सरकारी एवं निजी महाविद्यालय) के आधार पर सूची उक्त महाविद्यालयों से प्राप्त की।

न्यादर्श विधि एवं न्यादर्शन– शोध कार्य में अस्तरीकृत यादृच्छिक विधि का प्रयोग कर 600 विद्यार्थियों के रूप से न्यादर्श का चयन किया गया।

शोध में प्रयुक्त चर– प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने स्वतंन्त्र चर के रूप में सूचना प्रौद्योगिकी एवं इण्टरनेट संसाधनो के उपयोग को चयनित किया तथा समायोजन को आश्रित चर के निर्धारित किया।

शोध उपकरण– सूचना प्रौद्योगिकी संसाधन एवं इण्टरनेट उपयोग मापनी का निर्माण स्वमं किया तथा मानकीकृत समायोजन मापनी का चयन किया।

- सूचना प्रौधोगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन उपयोग मापनी (स्वंनिर्मित)
- विद्यालयी विद्यार्थियों के लिए समायोजन मापनी। (डॉ0 ए0 के0 पी0 सिन्हा एवं डॉ0 आर0 पी0 सिंह)

सांख्यिकीकरण– प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीकरण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात एवं सहसम्बन्ध का प्रयोग किया।

सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या– शोधकर्ता ने आंकडों के एकत्रीकरण के पश्चात् विवरणात्मक एवं अनुमानित सांख्यकिकी का प्रयोग किया।

तालिका संख्या 1.1 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन का उपयोग के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मान का विवरण।

चर	क्षेत्र	माध्यमान	मानक विचलन	टी मान	पी मान	सार्थकता
सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन का उपयोग	ग्रामीण	124.81	28.826	1.439	0.151	असार्थक
	शहरी	121.44	28.508			

(स्वतन्त्रता स्तर = 598) **(सार्थकता स्तर = 0.05 एवं 0.01)**

तालिका संख्या 1.1 में स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधनों के उपयोग के उपयोग के मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः124.81 एवं 28.826 व 121.44 एवं 28. 508 पाया गया। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के लिए टी परीक्षण का प्रयोग किया गया। स्वतन्त्रता स्तर 599 पर "टी" का मान = 1.439 ("पी" मान = 0.151) जो सार्थकता स्तर 0.05 पर असार्थक पाया गया।

उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि पूर्व प्रस्तावित शून्य परिकल्पना **कोरानों काल स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन का उपयोग में कोई सार्थक अन्तर नही है**"। जो सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है, स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के सूचना प्रौधोगिकी संसाधनों एवं इण्टरनेट के प्रयोग में अन्तर नही है।

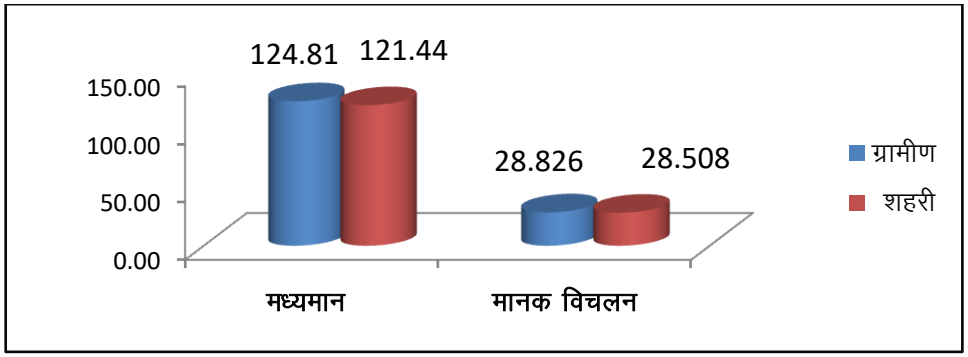

आरेख संख्या 1.1 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन का उपयोग के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मान का विवरण।

आरेख संख्या 1.1 से अवलोकित होता है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी समान रूप से सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन का उपयोग करते है।

तालिका संख्या 1.2 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के समायोजन मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मान का विवरण।

चर	क्षेत्र	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	पी मान	सार्थकता
भावनात्मक समायोजन	ग्रामीण	8.91	5.834	0.050	.960	असार्थक
	शहरी	8.93	5.790			
समाजिक समायोजन	ग्रामीण	9.75	5.615	0.078	0.938	असार्थक
	शहरी	9.71	5.571			
शैक्षिक समायोजन	ग्रामीण	8.35	5.043	0.046	0.963	असार्थक
	शहरी	8.33	5.110			
समायोजन	ग्रामीण	27.01	14.938	0.025	0.980	असार्थक
	शहरी	26.98	14.964			

(स्वतन्त्रता स्तर = 598) **(सार्थकता स्तर = 0.05 एवं 0.01)**

तालिका संख्या 4.2.4 से प्रदर्शित होता है, कि स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के प्रथम आयाम, भावनात्मक समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 8.91, 5.834 व 8. 93, 5.790 पाया गया। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के लिए टी परीक्षण का प्रयोग किया गया। स्वतन्त्रता स्तर 598 पर "टी" का मान 0ण्050 ("पी" मान 0.960) सार्थकता स्तर 0.05 पर असार्थक पाया गया।

द्वितीय आयाम, समाजिक समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 9.75, 5.615 व 9. 71, 5.571 पाया गया। "टी" का मान 0.078 ("पी" मान 0.938) सार्थकता स्तर 0.05 पर असार्थक पाया गया। तृतीय आयाम, शैक्षिक समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 8.35, 5.043 व 8.33, 5. 110 पाया गया। "टी" का मान 0.046 ("पी" मान 0.963) सार्थकता स्तर 0.05 पर असार्थक पाया गया।

स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 27.01, 14.938 व 26.98, 14.964 पाया गया। "टी" का मान 0.025 ("पी" मान 0.980) सार्थकता स्तर 0. 05 पर असार्थक पाया गया।

उपयुक्त विश्लेषण से ज्ञात होता हैं, कि स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के भावनात्मक, समाजिक, शैक्षिक समायोजन तथा कुल समायोजन में कोई अन्तर है, पूर्व प्रस्तावित शून्य परिकल्पना "**कोरानों काल स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही है।**" सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती हैं, अतः परिणामों के आधार पर कहा जा सकता हैं, कि स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन में अन्तर नही है।

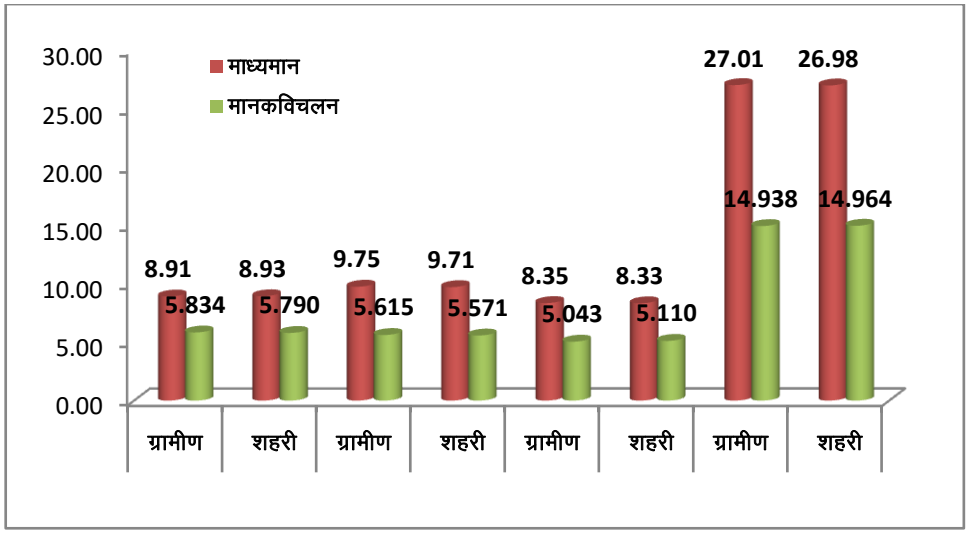

तालिका संख्या 1.2 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के समायोजन मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मान का विवरण।

आरेख संख्या 1.2 से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के भावनात्मक, समाजिक, शैक्षिक समायोजन एवं कुल समायोजन में समानता है।

तालिका संख्या 1.3 उच्च एवं निम्न सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन का उपयोग का विद्यार्थियों के समायोजन से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मान का विवरण।

चर	सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन का उपयोग	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	पी मान	सार्थकता
समायोजन	उच्च उपयोग	39.27	7.686	41.826	0.000	सार्थक
	निम्न उपयोग	7.02	3.619			

(स्वतन्त्रता स्तर = 413) (सार्थकता स्तर = 0.05 एवं 0.01)

तालिका संख्या 4.2.9 में स्नातक स्तर में अध्ययनरत् निम्न एवं उच्च सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधनों के उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के समायोजन सम्बन्धित मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 39.27, 7.686 व 7.02, 3.619 पाया गया। मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के लिए टी परीक्षण का प्रयोग किया गया। स्वतन्त्रता स्तर 413 पर "टी" का मान = 41.826 ("पी" मान = 0.000) जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक पाया गया।

उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि पूर्व प्रस्तावित शून्य परिकल्पना "**कोरानों काल में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन का उपयोग का उनके समायोजन पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है",** जो सार्थकता स्तर 0.05 पर अस्वीकृत की जाती है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है, उच्च एवं निम्न सूचना प्रौधोगिकी संसाधनों एवं इण्टरनेट के प्रयोग का विद्यार्थियों के समायोजन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

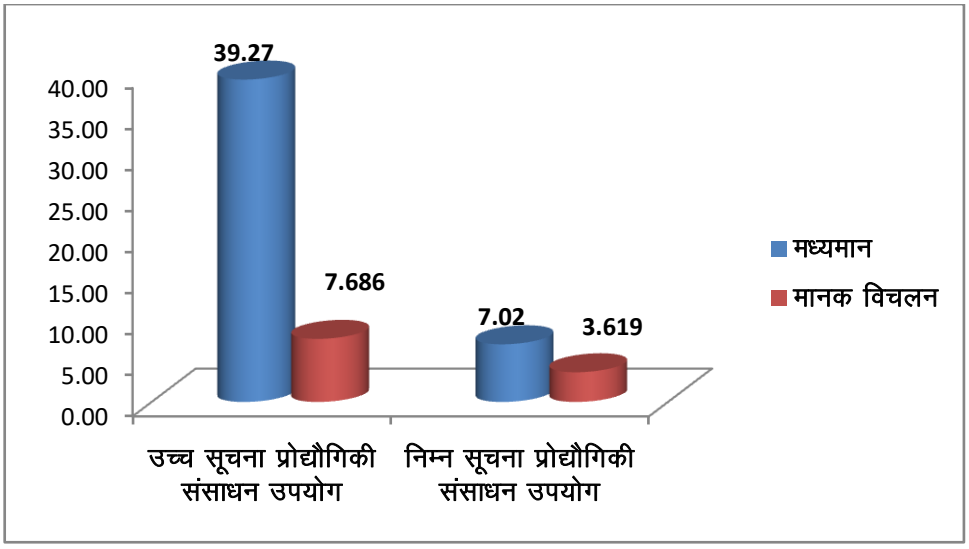

आरेख संख्या 1.3 निम्न एवं उच्च सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन का उपयोग का विद्यार्थियों के समायोजन का विवरण।

आरेख संख्या 1.3 से स्पष्ट है कि उच्च एवं निम्न सूचना प्रौधोगिकी संसाधनों एवं इण्टरनेट के प्रयोग का विद्यार्थियों के समायोजन में अन्तर है। निम्न सूचना प्रौधोगिकी संसाधनों एवं इण्टरनेट के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों में उच्च स्तर का समायोजन पाया गया।

तालिका संख्या 1.4 सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन का उपयोग एवं समायोजन सहसम्बन्ध का विवरण।

चर	मध्यमान	मानक विचलन	पी मान	सहसबन्ध	सार्थकता
सूचना प्रोद्यौगिकी संसाधन एवं इण्टर का प्रयोग	123.23	28.702	0.000	0.825	सार्थक
समायोजन	26.99	14.938			

तालिका संख्या 1.4 के अवलोकन से ज्ञात होता है, कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन का उपयोग एवं समायोजन प्राप्तांको के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध r (598) 0.825, (पी मान 0. 000) जो सार्थकता स्तर 0.01 तथा 0.05 पर सार्थक पाया गया।

उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है, कि पूर्व प्रस्तावित शून्य परिकल्पना **कोरानों काल में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन का उपयोग एवं समायोजन के मध्य में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नही है"**, जो सार्थकता स्तर 0.05 पर अस्वीकृत की जाती है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है, कोरानों काल में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन का उपयोग एवं समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध है।

शोध निष्कर्ष एवं व्याख्या–

प्रस्तुत शोधपत्र में निर्धारित उद्देश्यों के सांख्यिकीकरण के पश्चात् प्राप्त निष्कर्ष ज्ञात हुए जिसमें ज्ञात हुआ कि स्नातक स्तर में अध्ययन करने वाले ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी समान रूप से सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन का उपयोग करते है तथा ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के भावनात्मक, समाजिक, शैक्षिक समायोजन एवं कुल समायोजन में समानता है। इण्टरनेट एवं सूचना प्रौद्योगिकी संसाधनों का प्रयोग धीरे धीरे भारत के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक रूप से संचालित हो रहा है। ग्रामीण क्षेत्र हो या शहरी क्षेत्र सभी जगह के विद्यार्थी अपने शैक्षणिक कार्यक्रमों तथा मनोरंजन के लिए आधुनिक ऑनलाइन संसाधनों का प्रयोग करते पाये गये। उच्च एवं निम्न सूचना प्रौधोगिकी संसाधनों एवं इण्टरनेट के प्रयोग का विद्यार्थियों के

समायोजन में अन्तर है। निम्न सूचना प्रौधोगिकी संसाधनों एवं इण्टरनेट के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों में उच्च स्तर का समायोजन पाया गया तथा अत्याधिक प्रयोग करने विद्यार्थियों में निम्न स्तर का समायोजन पाया गया। पूर्व के किये गये अनेकों शोध परिणामों के आधार पर और प्रस्तुत शोध के आधार पर कहा जा सकता है कि उपयोगिता से अधिक सूचना प्रौद्योगिकी एवं संसाधनों का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों में समायोजन करने की क्षमता कम हो जाती है। वही सूचना प्रोद्यौगिकी एवं इण्टरनेट संसाधन का उपयोग एवं समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध है। जैसे जैस इण्टरनेट का अत्याधिक प्रयोग, लत में परिवर्तित हो जाता है।

शैक्षणिक सुझाव–

प्रतिस्पर्धा एवं अनिश्चिता के दौर में प्रत्येक व्यक्ति स्वयं की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए लगातार संघर्षशील होता रहा है। अनिश्चिता के अन्तरर्गत पिछले कुछ ही वर्ष पहले सम्पूर्ण विश्व ने कोराना महामारी का सामना किया। कोरोना महामारी के दौरान सम्पूर्ण विश्व अपने अस्तित्व को बचाने एवं बनाने की चुनौतियों को सामना किया। समस्त मानव जाति का मानसिक, शारीरिक, समाजिक विकास कोरोना काल में बाधित हुआ। इण्टरनेटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी संसाधनों ने जहॉ कोरोना द्वारा निर्मित विषम परिस्थितियों मुख्य रूप से सहायता प्रदान कि। मानव समाज की प्रथम आवश्यकता रोटी तथा दूसरी महत्वपूर्ण आवश्यकता शिक्षा होती है। शैक्षणिक विकास को नियमित करने के लिए भारतीय सरकारी ने सूचना प्रौद्योगिकी एवं इण्टरनेट संसाधनों के द्वारा विद्यार्थियों की शिक्षा की व्यवस्था ऑन लाइन द्वारा की गई। जिससे विद्यार्थियों अपने अपने पाठ्यक्रमों को पूर्ण कर पाये तथा परीक्षाओं की तैयारी कर पाये। सूचना प्रौद्योगिकी एवं इण्टरनेट के प्रयोग ने एक ओर विद्यार्थियों को सकारात्मक मार्गदर्शन किया किया वही इनके प्रयोग के नकारात्मक प्रभाव भी सामने आये । इन ऑनलाइन संसाधनों के अत्याधिक प्रयोग ने अनेकों मानसिक, शारीरिक एवं संवेगात्मक रूप से बीमार किया। ज्ञान का भण्डार के रूप आज इंटरनेट पर कोई भी संशय नही है। लेकिन इण्टरनेट के द्वारा किस तरह से, किस माध्यम से एवं किस प्रकार ज्ञान विकास भी किया जाये और विद्यार्थियों को मानसिक, शारीरिक एवं अन्य प्रकार से सुरक्षित भी रखा जाये। इन सब बातो के की जिम्मेदारी मुख्य रूप से माता–पिता, विद्यालय प्रबन्धन एवं शिक्षकों एवं स्वमं विद्यार्थियों की हो गई है। अपने शैक्षणिक प्रयोग और केवल कुछ समय के मनोरंजन के लिए प्रयोग में आने वाली सामग्री का ही प्रयोग करे। साथ सभी अभिभावकों की जिम्मेदारी है कि वे अपने बच्चों पर सकारात्मक दृष्ठिकोंण से निगरानी रखें जिससे उनका ज्ञान में विकास भी हो तथा मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ भी रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

[1]. Anjarwati R, Saadah L. Student learning engagement in the online class. EnJourMe (English Journal of Merdeka): Culture, *Language, and Teaching of English*. 2021 Dec 28;6(2):39-49.
[2]. Anugrahana A. Hambatan, solusi dan harapan: pembelajaran daring selama masa pandemi covid-19 oleh guru sekolah dasar. Scholaria: *Jurnal Pendidikan Dan Kebudayaan*. 2020 Sep 28;10(3):282-9.
[3]. Bond M. Facilitating student engagement through the flipped learning approach in K-12: A systematic review. *Computers & Education.* 2020 Jul 1;151:103819.
[4]. Christenson S, Reschly AL, Wylie C. Handbook of research on student engagement. New York: *Springe*r; 2012 Feb 23.
[5]. Evans C, Mujis D, Tomlinson D. Engaged student learning: High impact strategies to enhance student achievement.
[6]. Fahruddin F, Jana P, Setiawan J, Rochmat S, Aman A, Yuliantri RD. Student perception of online learning media platform during the COVID-19 pandemic. *Journal of Education Technology.* 2022 Mar 1;6(1):126-32.
[7]. Farley IA, Burbules NC. Online education viewed through an equity lens: Promoting engagement and success for all learners. *Review of Education*. 2022 Dec;10(3):e3367.
[8]. Fauzi I, Khusuma IH. Teachers' elementary school in online learning of COVID-19 pandemic conditions. *Jurnal Iqra': Kajian Ilmu Pendidikan.* 2020 Jun 6;5(1):58-70.

[9]. Githinji, S. K. (2023). Emotion Approach Coping and Adjustment Challenges Among Students in Higher Education Institutions. In *Handbook of Research on Coping Mechanisms for First-Year Students Transitioning to Higher Education* (pp. 245-264). IGI Global.
[10]. Gkora, V., & Driga, A. M. (2023). The role of ICTs in student's emotional and behavioral difficulties.
[11]. Hastomo T, Septiyana L. The Investigation of Students' Engagement in Online Class during Pandemic Covid-19. *Jurnal Penelitian Ilmu Pendidikan*. 2022 Oct 1;15(2).
[12]. https://xello.world/en/blog/student-engagement/what-is-student-engagement/
[13]. Kahu ER, Nelson K. Student engagement in the educational interface: Understanding the mechanisms of student success. *Higher education research & development.* 2018 Jan 2;37(1):58-71.
[14]. Kaiqi Shao, Gulsah Kutuk, Luke K. Fryer, Laura J. Nicholson, Jidong Guo (2023). Factors influencing Chinese undergraduate students' emotions in an online EFL learning context during the COVID pandemic. https://doi.org/10.1111/jcal.12791 https://onlinelibrary.wiley.com/doi/full/10.1111/jcal.12791
[15]. Kuh GD. The national survey of student engagement: Conceptual and empirical foundations. New directions for institutional research. 2009;141:5-20.
[16]. Latorre-Cosculluela, C., Sierra-Sánchez, V., Rivera-Torres, P., & Liesa-Orús, M. (2023). ICT efficacy and response to different needs in university classrooms: effects on attitudes and active behaviour towards technology. *Journal of Computing in Higher Education*, 1-18.
[17]. Macfarlane B, Tomlinson M. Critiques of student engagement. Higher Education Policy. 2017 Mar;30:5-21.
[18]. Ogakwu, N. V., Ede, M. O., Agu, P. U., Manafa, I., Ezeaku, F., Onah, S. O., ... & Oneli, J. O. (2023). School-based intervention for academic stress management and school adjustment among industrial technical education students: implications for educational administrators. *Medicine*, *102*(2).
[19]. Qowi NH, Suratmi S, Faridah VN, Lestari TP, Pramestirini RA, Pamungkas NR, Karsim K. The effect of online learning on student satisfaction in nursing education during the COVID-19 pandemic. *Jurnal NERS*. 2022 Oct;17(2).
[20]. Rahmatika R, Yusuf M, Agung L. The effectiveness of YouTube as an online learning media. Journal of Education Technology. 2021 Apr 8;5(1):152-8.
[21]. Ritonga AW, Zulfida S, Ritonga M, Ardinal E, Susanti D. The use of e-learning as an online based Arabic learning media for students. *In Journal of Physics: Conference Series* 2021 Jun 1 (Vol. 1933, No. 1, p. 012127). IOP Publishing.
[22]. Singh, J., & Kumari, M. Role of ICT in Indian Education System and How does it Impact the Student's Learning?.
[23]. Tiyar FR, Khoshsima H. Understanding students' satisfaction and continuance intention of e-learning: Application of expectation confirmation model. *World Journal on Educational Technology*. 2015 Dec 1;7(3):157-66.
[24]. Trowler V. Student engagement literature review. The higher education academy. 2010 Nov 18;11(1):1-5.
[25]. V.S.R. Vijaya kumar T. Agrawal (2013) Impact of ICT usage on adjustment of college students https://www.researchgate.net/publication/290188213_Impact_of_ICT_usage_on_adjustment_of_college_students
[26]. अमिता जैन (2019) महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन *International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)* 47 ISSN : 2581-9925, Volume 01, No. 04, October - December, 2019, pp.47-50
[27]. Zhao J, Mushtaque I, Deng L. The impact of technology adaptation on academic engagement: a moderating role of perceived argumentation strength and school support. *Frontiers in psychology*. 2022 Jul 7;13:962081.